



AIR MARSHAL DR. (SMT.) PADMA BANDOPADHYAY, PVSM, AVSM, VSM (Retd.)

Air Marshal Dr. (Smt.) Padma Bandopadhyay, retired Director General Medical Services (Air Force), has served in the Indian Air Force for nearly four decades.

2. Born on 4th November, 1944, at the famous temple town Tirupathi, Dr. Bandopadhyay graduated from the Armed Forces Medical College (AFMC) Pune in 1967. She obtained Post Graduate Diploma in Aerospace Medicine from Bangalore University in 1975, MSc. (Defence Sciences) from Madras University in 1978; MD Physiology in 1984 from AFMC Pune; Ph.D in Physiology from Bharathiar University in 1995 and Certificate in Adolescent Health and Counselling from Indira Gandhi National Open University in 2015.

3. Dr. Bandopadhyay in the Punjab area (1970) looked after three premature new-born babies weighing less than 1.0 kg. with no modern facilities and at times with not even basic electricity. They survived in spite of the biting cold in December month. During the 1971 Indo- Pak war, the proactive approach of the medical team led by her and their selfless service round the clock often under Pak air raids, saved lives and limbs of the soldiers and air warriors in the forward operational air base in Punjab. Throughout her career in operational squadrons, the aircrew under her care were always flying fit; no fatal accidents occurred due to medical causes or negligence. She conducted pioneering research study in Arctic in the winter of 1989/90 to study the human physiological responses in tropical men during acute transmigration from tropical to arctic environment. She undertook High Altitude research to evaluate, effective and economical acclimatization procedure to high altitude with a view to prevent High Altitude Pulmonary Oedema (HAPO) and High Altitude Cerebral Oedema (HACO), which helped in formulating acclimatization schedule. This also paved the way for use of Nitrous Oxide as a therapeutic agent to control and reduce the incidence of HAPO and HACO (1990-95). She also became instrumental in establishment of Telemedicine at CH Air Force Bangalore, the first in Armed Forces to provide specialist treatment at far flung areas (2004-2005).

4. Post retirement, Dr. Bandopadhyay's contribution in Manas Foundation's gender sensitization program for commercial drivers in Delhi and NCR has been invaluable. She is providing Primary healthcare to underprivileged and economically backward section of the society through Telemedicine under the Aegis of Rama Krishna Mission in the far-flung areas of Uttar Pradesh. She has many 'Firsts' to her credit, such as during the Indo-Pak war of 1971, Flt. Lt. Satinath and Flt. Lt. (Mrs) Padma Bandopadhyay were both awarded Vishisht Seva Medal (VSM), thereby becoming the first ever husband and wife team to be awarded by the President at the same Investiture Ceremony; First Lady Aerospace Medicine Specialist of India in 1975; First lady of the Armed Forces to have successfully completed Defence Services Staff College at Wellington, Nilgiris (1978); The First Indian Lady to have conducted research in the Icy Arctic in 1989-90; First Lady Director General Medical Services of Indian Air Force; First Lady Air Marshal of the Indian Air Forces and all other Air Forces of the World.

5. Dr. Bandopadhyay is the recipient of numerous honours and awards. Prominent among these are Gold Medal for standing First in Medicine in the University (1967); Armed Forces Awards Param Vishisht Seva Medal (PVSM)-2006; Ati Vishisht Seva Medal (AVSM) -2002; Vishisht Seva Medal (VSM) -1973; Felicitations from Yogiji Maharaj Centenary celebrations and creation of Akshardham, Gandhinagar (1992): Indira Gandhi Priyadarshini Award for outstanding services, Achievements and Contributions- 1995; Limca Book of Records Award for extra-ordinary contribution towards empowering Women- 2014; Mural of Armed Forces Women at Surat, Gujarat-2019; International Award -'Women of Color' in Aerospace by Mae Jemison Foundation, USA-2006.





एयर मार्शल डॉ. (श्रीमती) पद्मा बंदोपाध्याय, प.वि.से.मे., अ.वि.से.मे., वि.से.मे. (सेवानिवृत्त)

एयर मार्शल डॉ. (श्रीमती) पद्मा बंदोपाध्याय, सेवानिवृत्त महानिदेशक चिकित्सा सेवा (वायु सेना) ने तकरीबन चार दशकों तक भारतीय वायु सेना में कार्य किया है।

2. 4 नवंबर, 1944 को प्रसिद्ध मंदिर शहर तिरुपति में जन्मी, डॉ. बंदोपाध्याय ने 1967 में सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज (एएफएमसी) पुणे से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने 1975 में बैंगलोर विश्वविद्यालय से एयरोस्पेस मेडिसिन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा; 1978 में मद्रास विश्वविद्यालय से एमएससी (रक्षा विज्ञान); 1984 में सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज (एएफएमसी) पुणे से एमडी फिजियोलॉजी; 1995 में भरतियार विश्वविद्यालय से फिजियोलॉजी में पीएच.डी तथा 2015 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से किशोर स्वास्थ्य और परामर्श में प्रमाणपत्र हासिल किया।

3. डॉ. बंदोपाध्याय ने 1970 में, पंजाब क्षेत्र में समय से पहले जन्म लेने वाले 1.0 किग्रा से कम वजन वाले तीन शिशुओं की देखभाल की। उस समय न तो इतनी आधुनिक सुविधाएं और न ही बिजली जैसी बुनियादी सुविधा मौजूद थीं। दिसंबर महीने की कड़क ठंड के बावजूद वे शिशु जीवित रहे। 1971 के भारत–पाक युद्ध के दौरान, पाक हवाई हमलों के बीच, उनकी अगुवाई में चिकित्सा दल की चौबीसों घंटे सक्रियता और निस्वार्थ सेवा ने, पंजाब के अग्रणी ऑपरेशनल एयर बेस में घायल सैनिकों और वायु योद्धाओं का जीवन बचाया। ऑपरेशनल स्क्वाड्रन में उनकी सेवा के दौरान, उनकी देखभाल में रहने वाला हवाई दल हमेशा फिट रहकर उड़ान भरता रहा; चिकित्सा कारणों या लापरवाही की वजह से कोई भी घातक दुर्घटना नहीं हुई। उन्होंने 1989–90 की सर्दियों में आर्कटिक में उष्णकटिबंधीय वातावरण से आर्कटिक में आने पर उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के पुरुषों की शारीरिक अनुक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए अग्रणी शोध अध्ययन किया। उन्होंने हाई एल्टीट्यूड पल्मोनरी एडिमा (एचएपीओ) और हाई एल्टीट्यूड सेरेब्रल एडिमा (एचएसीओ) की रोकथाम के लिए प्रभावी और किफायती परिस्थिति–अनुकूलन प्रक्रिया के आकलन के लिए हाई एल्टीट्यूड अनुसंधान किया। इससे परिस्थिति–अनुकूलन कार्यक्रम तैयार करने में मदद मिली। इससे एचएपीओ और एचएसीओ की घटनाओं (1990–95) को नियंत्रित करने और उन्हें कम करने के लिए चिकित्सीय साधन के तौर पर नाइट्रस ऑक्साइड का प्रयोग करने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने सीएच वायु सेना बैंगलोर में टेलीमेडिसिन की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पहली बार, दूर दराज के इलाकों में सशस्त्र बलों को प्रदान की जाने वाली इस प्रकार की विशेष उपचार सुविधा थी (2004–2005)।

4. सेवानिवृत्ति के बाद डॉ. बंधोपाध्याय का दिल्ली और एनसीआर के कमर्शियल ड्राइवरों के लिए मानस फाउंडेशन के जेंडर जागरूकता कार्यक्रम में अमूल्य योगदान रहा है। वह उत्तर प्रदेश के दूरदराज के इलाकों में रामकृष्ण मिशन के तत्वावधान में टेलीमेडिसिन के माध्यम से समाज के वंचित और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं। उनकी बहुत सी उपलब्धियां सर्वप्रथम के रूप में रही हैं, जैसे 1971 के भारत–पाक युद्ध के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेंट सतीनाथ और फ्लाइट लेफ्टिनेंट श्रीमती पद्मा बंधोपाध्याय दोनों को विशिष्ट सेवा पदक प्रदान किया गया था, और ऐसा पहली बार हुआ जब राष्ट्रपति द्वारा एक ही अलंकरण समारोह में पति और पत्नी की टीम को यह पदक प्रदान किया गया था; वह 1975 में भारत की प्रथम महिला एयरोस्पेस मेडिसिन स्पेशलिस्ट हैं; वह सशस्त्र बल की पहली महिला हैं जिन्होंने 1978 में वेलिंगटन, नीलगिरी में डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज में सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा किया; वह पहली भारतीय महिला हैं जिन्होंने 1989–90 के दौरान बर्फीले आर्कटिक में अनुसंधान किया है; वह भारतीय वायुसेना की पहली महिला चिकित्सा सेवा महानिदेशक हैं; वह भारतीय वायु सेना और दुनिया की दूसरी सभी वायु सेनाओं की प्रथम महिला एयर मार्शल हैं।

5. डॉ. बंधोपाध्याय को अनगिनत सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, इनमें विश्वविद्यालय में चिकित्सा में प्रथम स्थान पर आने के लिए स्वर्ण पदक (1967); सशस्त्र बल पुरस्कार परम विशिष्ट सेवा पदक (पीवीएसएम)–2006; अति विशिष्ट सेवा पदक (एवीएसएम)–2002; विशिष्ट सेवा पदक (वीएसएम)–1973; योगीजी महाराज शताब्दी समारोह और अक्षरधाम, गांधीनगर का निर्माण की ओर से सम्मान –1992; उत्कृष्ट सेवाएं, उपलब्धि और योगदान के लिए इंदिरा गांधी प्रियदर्शिनी पुरस्कार–1995; महिलाओं के सशक्तीकरण में असाधारण योगदान के लिए लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स पुरस्कार–2014; सूरत, गुजरात–में सशस्त्र बलों की महिला सम्मान–2019; माए–जेमिसन फाउंडेशन, यूएसए –2016 द्वारा एयरोस्पेस में अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार–'वोमेन ऑफ कलर' प्रमुख हैं।